IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double- Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

रामचरितमानस के संवादों में तुलसीदास की चरित्र-चित्रण कला का तुलनात्मक एवं विश्लेषण

लीलाधर[1] and डॉ. अमन अहमद[2]
शोधार्थी[1], सहायक प्रोफेसर[2]
हिंदी-विभाग
मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़

सारांश: *गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस हिंदी साहित्य की भक्ति, लोकमंगल और आदर्शवादी काव्य-परंपरा का अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसकी विशिष्टता केवल रामकथा के पुनर्सृजन में नहीं, बल्कि पात्रों के मनोवैज्ञानिक, नैतिक, सामाजिक और भावात्मक स्वरूप को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने में भी निहित है। रामचरितमानस में संवाद चरित्र-चित्रण का एक प्रमुख माध्यम हैं। तुलसीदास ने राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, दशरथ, कौशल्या, कैकेयी, मंथरा, रावण, विभीषण तथा अन्य पात्रों के व्यक्तित्व को उनके कथनों, प्रश्नों, उत्तरों, तर्कों, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और मौन संकेतों के माध्यम से विकसित किया है। संवादों के माध्यम से पात्रों के बाह्य व्यवहार के साथ-साथ उनके अंतर्मन, मूल्यबोध, कर्तव्यनिष्ठा, प्रेम, त्याग, अहंकार, करुणा और नैतिक संघर्ष का उद्‌घाटन होता है।*

मुख्य संकेतक: रामचरितमानस, तुलसीदास, संवाद, चरित्र-चित्रण, राम, भरत, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, रावण, तुलनात्मक अध्ययन।

I. परिचय

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में गोस्वामी तुलसीदास का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने *रामचरितमानस* के माध्यम से रामकथा को भारतीय लोकजीवन, धार्मिक चेतना, नैतिक आदर्शों और मानवीय संवेदनाओं से जोड़कर एक व्यापक सांस्कृतिक स्वरूप प्रदान किया। *रामचरितमानस* का कथानक मूलतः राम के जीवन और उनके आदर्श चरित्र पर आधारित है, किंतु इसकी साहित्यिक शक्ति केवल राम के चरित्र तक सीमित नहीं है। तुलसीदास ने कथा के प्रत्येक प्रमुख पात्र को उसकी विशिष्ट मनोवृत्ति, सामाजिक भूमिका और नैतिक दृष्टि के अनुरूप विकसित किया है। यही कारण है कि राम के साथ-साथ भरत, लक्ष्मण, सीता, हनुमान, दशरथ, कौशल्या, कैकेयी, मंथरा, रावण और विभीषण जैसे पात्र भी हिंदी साहित्य में स्थायी पहचान प्राप्त करते हैं।

चरित्र-चित्रण की दृष्टि से संवाद अत्यंत प्रभावशाली काव्यात्मक उपकरण है। वर्णन के माध्यम से कवि किसी पात्र के गुण-दोषों को सीधे प्रस्तुत कर सकता है, लेकिन संवाद के माध्यम से वही चरित्र स्वयं बोलता हुआ दिखाई देता है। उसके विचार, भावनाएँ, तर्क, इच्छाएँ और अंतर्द्वंद्व पाठक के सामने स्वाभाविक रूप से प्रकट होते हैं। तुलसीदास ने इस तकनीक का अत्यंत सफल प्रयोग किया है। उनके संवादों में पात्रों की सामाजिक स्थिति, संस्कार, मानसिक अवस्था और नैतिक दृष्टिकोण का स्पष्ट प्रतिबिंब दिखाई देता है।

II. अध्ययन की पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन साहित्यिक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें *रामचरितमानस* के प्रमुख संवादों को प्राथमिक साहित्यिक आधार मानकर तुलसीदास की चरित्र-चित्रण शैली का अध्ययन किया गया है। सहायक सामग्री के रूप में तुलसी साहित्य, रामकथा संबंधी आलोचनात्मक साहित्य तथा हिंदी साहित्य के इतिहास से संबंधित विद्वानों के विचारों का उपयोग किया गया है। अध्ययन में तुलनात्मक, व्याख्यात्मक, मनोवैज्ञानिक और मूल्यपरक दृष्टिकोण अपनाया गया है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double- Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

III. संवाद और चरित्र-चित्रण का अंतर्संबंध

संवाद किसी भी आख्यान की गतिशीलता को बढ़ाने के साथ पात्रों को जीवंत बनाते हैं। *रामचरितमानस* में संवादों का प्रयोग बहुआयामी है। वे कथा को आगे बढ़ाते हैं, परिस्थितियों को स्पष्ट करते हैं, पात्रों के संबंधों को स्थापित करते हैं और उनके मनोभावों को उद्घाटित करते हैं।

तुलसीदास के संवादों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि प्रत्येक पात्र अपनी प्रकृति के अनुरूप बोलता है। राम के संवादों में मर्यादा, शांति और कर्तव्यबोध दिखाई देता है; लक्ष्मण के संवादों में तीव्रता, उत्साह और भ्रातृप्रेम; भरत के संवादों में त्याग और विनम्रता; सीता के संवादों में प्रेम, दृढ़ता और आत्मसम्मान; हनुमान के संवादों में सेवा और बुद्धिमत्ता; जबकि रावण के संवादों में अहंकार और आत्मविश्वास का स्वर प्रमुख है।

तालिका 1: प्रमुख पात्रों के संवादों में व्यक्त चरित्रगत विशेषताएँ

पात्र	संवादों की प्रमुख विशेषता	प्रमुख चरित्रगत गुण
राम	संयमित, मर्यादित और तर्कपूर्ण	मर्यादा, कर्तव्य, करुणा
सीता	भावपूर्ण एवं दृढ़	प्रेम, त्याग, आत्मसम्मान
लक्ष्मण	तीव्र और भावनात्मक	वीरता, सेवा, भ्रातृप्रेम
भरत	विनम्र एवं आत्मत्यागपूर्ण	त्याग, धर्म, निष्ठा
हनुमान	बुद्धिमत्तापूर्ण और सेवाभावयुक्त	भक्ति, विवेक, साहस
दशरथ	करुण एवं भावुक	पितृप्रेम, संवेदनशीलता
कैकेयी	तर्कपूर्ण किंतु आग्रहपूर्ण	महत्वाकांक्षा, मातृभाव, द्वंद्व
रावण	आत्मविश्वासी एवं अहंकारी	शक्ति, अहंकार, स्वार्थ
विभीषण	विवेकपूर्ण एवं नीति-प्रधान	धर्म, विवेक, सत्यनिष्ठा

IV. राम के संवादों में मर्यादा और आदर्श चरित्र

तुलसीदास के राम आदर्श पुरुष, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई और आदर्श राजा के रूप में चित्रित हैं। उनके संवादों में भावनात्मक परिस्थितियों के बीच भी संयम और मर्यादा बनी रहती है। वनवास की सूचना मिलने पर वे परिस्थितियों को व्यक्तिगत अन्याय के रूप में नहीं देखते, बल्कि पिता के वचन और राजधर्म के संदर्भ में स्वीकार करते हैं।

राम के संवादों में उनकी सबसे बड़ी विशेषता परिस्थितियों पर नियंत्रण रखने की क्षमता है। वे कठिन परिस्थितियों में भी क्रोध या प्रतिशोध का मार्ग नहीं अपनाते। यही संवाद-शैली उन्हें अन्य पात्रों से अलग करती है।

राम का चरित्र स्थिर नैतिक मूल्यों पर आधारित है। वे अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं से ऊपर पारिवारिक दायित्व और धर्म को रखते हैं। तुलसीदास ने इस आदर्श को संवादों के माध्यम से अधिक प्रभावी बनाया है क्योंकि राम अपने निर्णयों को स्वयं व्यक्त करते हैं।

V. राम-भरत संवाद: त्याग और धर्म का तुलनात्मक स्वरूप

रामचरितमानस में राम और भरत का संबंध भाईचारे, त्याग और धर्म की उच्चतम अभिव्यक्ति है। दोनों के संवाद तुलसीदास की चरित्र-चित्रण कला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। राम वनवास को धर्मपालन के रूप में स्वीकार करते हैं, जबकि भरत राजसत्ता को अस्वीकार करके राम को वापस अयोध्या लाने का प्रयास करते हैं।

राम के चरित्र में कर्तव्य की प्रधानता है, जबकि भरत के चरित्र में त्याग की। राम कहते हैं कि पिता का वचन और धर्म सर्वोपरि है, वहीं भरत की दृष्टि से राम का वनवास उनके लिए असहनीय है। इस प्रकार दोनों भाइयों के संवाद एक ही नैतिक व्यवस्था के दो अलग-अलग रूप प्रस्तुत करते हैं।

तालिका 2: राम और भरत का तुलनात्मक चरित्र-चित्रण

आधार	राम	भरत
प्रमुख मूल्य	मर्यादा और कर्तव्य	त्याग और भ्रातृप्रेम

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double- Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

सत्ता के प्रति दृष्टिकोण	धर्मानुकूल स्वीकार	व्यक्तिगत रूप से अस्वीकार
भावनात्मक स्वर	संयमित	अत्यंत करुण एवं विनम्र
निर्णय	वनवास स्वीकार	राम को वापस लाने का प्रयास
आदर्श	मर्यादा पुरुषोत्तम	त्यागी एवं धर्मनिष्ठ भाई

इस तुलना से स्पष्ट होता है कि तुलसीदास ने दोनों पात्रों को एक-दूसरे के विरोधी न बनाकर परस्पर पूरक बनाया है।

VI. राम-सीता संवाद: दांपत्य प्रेम और आत्मसम्मान

राम और सीता के संवादों में प्रेम के साथ-साथ दांपत्य संबंधों की गहराई दिखाई देती है। वनगमन के प्रसंग में सीता का राम के साथ जाने का आग्रह उनके चरित्र की दृढ़ता को प्रकट करता है। सीता केवल पति का अनुसरण करने वाली पात्र नहीं हैं, बल्कि अपनी इच्छा और निर्णय को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने वाली सशक्त स्त्री के रूप में सामने आती हैं।

उनके संवादों में प्रेम, समर्पण, आत्मसम्मान और साहस का समन्वय है। वे सुख-सुविधाओं की अपेक्षा पति के साथ जीवन के संघर्ष को अधिक महत्वपूर्ण मानती हैं। इस प्रकार तुलसीदास ने सीता के चरित्र को केवल करुणा की प्रतिमा न बनाकर मानसिक रूप से दृढ़ और निर्णयक्षम व्यक्तित्व प्रदान किया है।

VII. राम-लक्ष्मण संवाद: भ्रातृप्रेम और भावनात्मक तीव्रता

लक्ष्मण का चरित्र राम की तुलना में अधिक भावनात्मक और तीव्र है। उनके संवादों में राम के प्रति अटूट प्रेम और सेवा-भाव दिखाई देता है। वे अन्याय और अपमान की स्थिति में तुरंत प्रतिक्रिया करते हैं, लेकिन राम की मर्यादा और निर्णय के सामने अपने क्रोध को नियंत्रित कर लेते हैं।

लक्ष्मण के संवादों का विशेष गुण उनकी भावात्मक ऊर्जा है। वे राम की रक्षा को अपना सर्वोच्च दायित्व मानते हैं। इस दृष्टि से लक्ष्मण का चरित्र राम की शांत मर्यादा के साथ एक प्रभावशाली तुलनात्मक संतुलन स्थापित करता है।

VIII. हनुमान के संवादों में भक्ति और बुद्धि का समन्वय

हनुमान *रामचरितमानस* के अत्यंत लोकप्रिय पात्रों में से एक हैं। उनके चरित्र में शारीरिक शक्ति, बुद्धि, विनम्रता, साहस और भक्ति का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है। उनके संवाद परिस्थिति के अनुरूप बदलते हैं। वे राम के सामने अत्यंत विनम्र भक्त हैं, जबकि शत्रु के सामने निर्भीक योद्धा।

हनुमान के संवादों से स्पष्ट होता है कि तुलसीदास के लिए आदर्श सेवक केवल शक्तिशाली नहीं बल्कि विवेकशील भी होना चाहिए। वे परिस्थिति के अनुसार भाषा, व्यवहार और रणनीति का चयन करते हैं। इसलिए उनका चरित्र केवल भक्तिभाव का प्रतीक न रहकर बुद्धिमत्ता और नेतृत्व का भी उदाहरण बन जाता है।

IX. कैकेयी-दशरथ संवाद: मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण

कैकेयी और दशरथ के संवादों में तुलसीदास की मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण क्षमता विशेष रूप से दिखाई देती है। कैकेयी का चरित्र एकांगी खलनायिका के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है। उनके व्यवहार के पीछे मातृभाव, मोह, असुरक्षा, महत्वाकांक्षा और मंथरा के प्रभाव जैसे विभिन्न मनोवैज्ञानिक तत्व दिखाई देते हैं।

दशरथ के संवादों में पुत्र-वियोग का भय और असहायता व्यक्त होती है। वे राजा होते हुए भी पुत्र के प्रति अपने प्रेम के सामने अत्यंत कमजोर दिखाई देते हैं। इस प्रकार तुलसीदास ने दशरथ के चरित्र में राजकीय सत्ता और व्यक्तिगत भावुकता का द्वंद्व प्रस्तुत किया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double- Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, July 2026 Impact Factor: 8.2

X. रावण-विभीषण संवाद: अहंकार और विवेक का संघर्ष

रावण और विभीषण के संवादों में तुलसीदास ने दो विपरीत मानसिकताओं का चित्रण किया है। रावण शक्ति और अहंकार का प्रतिनिधि है, जबकि विभीषण विवेक और नीति का। विभीषण बार-बार रावण को उचित मार्ग अपनाने की सलाह देता है, लेकिन रावण अपनी शक्ति और विजय के अहंकार में उसकी बात को स्वीकार नहीं करता।

यह संवाद केवल दो भाइयों का विवाद नहीं है, बल्कि नीति और अहंकार के बीच संघर्ष का प्रतीक है। विभीषण का चरित्र इस बात को स्थापित करता है कि सत्य का समर्थन करना कभी-कभी अपने परिवार और सत्ता के विरुद्ध खड़े होने की मांग भी करता है।

तालिका 3: रावण और विभीषण का तुलनात्मक विश्लेषण

आधार	रावण	विभीषण
मानसिकता	अहंकारपूर्ण	विवेकपूर्ण
नीति	स्वार्थ और शक्ति	धर्म और नीति
संवाद का स्वर	आदेशात्मक	परामर्शात्मक
राम के प्रति दृष्टि	विरोध	सम्मान
परिणाम	विनाश	सम्मान और विजय पक्ष में स्थान

XI. संवादों में स्त्री-पात्रों का चरित्र-चित्रण

तुलसीदास ने स्त्री पात्रों को भी विभिन्न मनोवैज्ञानिक और सामाजिक भूमिकाओं में प्रस्तुत किया है। सीता, कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा और मंथरा के संवादों में स्त्री-मन की विविध अवस्थाएँ दिखाई देती हैं।

सीता में दृढ़ता और समर्पण, कौशल्या में मातृकरुणा, सुमित्रा में विवेक एवं कर्तव्यबोध और कैकेयी में मोह तथा महत्वाकांक्षा के साथ भावनात्मक द्वंद्व दिखाई देता है। इस प्रकार स्त्री पात्रों का चरित्र-चित्रण एकरूप नहीं है। प्रत्येक पात्र की भाषा और संवाद उसकी मानसिक स्थिति के अनुरूप निर्मित है।

XII. संवादों में मनोवैज्ञानिक यथार्थ

तुलसीदास के चरित्र-चित्रण की महत्वपूर्ण विशेषता मनोवैज्ञानिक यथार्थ है। पात्र केवल घटनाओं पर प्रतिक्रिया नहीं करते, बल्कि उनके भीतर विचारों और भावनाओं का संघर्ष चलता है। दशरथ का पुत्र-वियोग, भरत का आत्मग्लानि-बोध, लक्ष्मण का क्रोध, सीता का वनगमन का आग्रह, कैकेयी का मोह और रावण का अहंकार संवादों के माध्यम से प्रकट होते हैं।

इस दृष्टि से *रामचरितमानस* के संवाद भारतीय काव्य परंपरा में मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

XIII. तुलसीदास की संवाद-शैली की प्रमुख विशेषताएँ

तुलसीदास की संवाद-शैली में निम्नलिखित विशेषताएँ प्रमुख हैं: -

1. **पात्रानुकूल भाषा:** प्रत्येक पात्र की भाषा उसकी सामाजिक और मानसिक स्थिति के अनुरूप है।
2. **भावानुकूल अभिव्यक्ति:** करुण, वीर, शांत और भक्तिपरक प्रसंगों में भाषा का स्वर बदल जाता है।
3. **लोकभाषा का प्रभाव:** संवादों में अवधी की सहजता और लोकजीवन की निकटता दिखाई देती है।
4. **संक्षिप्तता एवं प्रभावशीलता:** कम शब्दों में गहरे भावों को व्यक्त किया गया है।
5. **नैतिक संदेश:** संवादों के माध्यम से धर्म, कर्तव्य, त्याग और नीति जैसे मूल्यों को स्थापित किया गया है।
6. **मनोवैज्ञानिक गहराई:** पात्रों के आंतरिक द्वंद्व को संवादों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।
7. **कथानक-विकास:** संवाद कथा की गति और तनाव को बनाए रखते हैं।

XIV. तुलनात्मक विश्लेषण

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double- Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, July 2026 Impact Factor: 8.2

तुलसीदास की चरित्र-चित्रण कला को समझने के लिए प्रमुख पात्रों की तुलना अत्यंत उपयोगी है। राम और रावण नैतिकता और अहंकार के दो विपरीत ध्रुव हैं। राम संयम और धर्म का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि रावण शक्ति और अहंकार का। राम और लक्ष्मण में शांत विवेक तथा तीव्र भावुकता का अंतर दिखाई देता है। राम और भरत दोनों धर्मनिष्ठ हैं, किंतु राम कर्तव्यपालन तथा भरत त्याग के आदर्श को अधिक प्रमुखता देते हैं। सीता और कैकेयी दोनों दृढ़ इच्छाशक्ति वाली स्त्रियाँ हैं, लेकिन उनकी इच्छाओं की दिशा अलग है। हनुमान और विभीषण दोनों विवेकशील हैं, किंतु हनुमान का विवेक भक्ति और सेवा से जुड़ा है, जबकि विभीषण का विवेक नीति और धर्म से।

तालिका 4: प्रमुख पात्रों का तुलनात्मक विश्लेषण

पात्र-युग्म	प्रमुख अंतर	समानता
राम–रावण	धर्म बनाम अहंकार	दोनों प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता
राम–भरत	कर्तव्य बनाम त्याग	दोनों धर्मनिष्ठ
राम–लक्ष्मण	संयम बनाम भावात्मक तीव्रता	भ्रातृप्रेम
राम–सीता	मर्यादा बनाम दृढ़ समर्पण	पारस्परिक निष्ठा
हनुमान–विभीषण	सेवा-भक्ति बनाम नीति-विवेक	राम के प्रति निष्ठा
कैकेयी–कौशल्या	मोह बनाम मातृकरुणा	पुत्र के प्रति भावनात्मक लगाव
रावण–विभीषण	अहंकार बनाम विवेक	दोनों लंकाई राजपरिवार से संबंधित

XV. संवादों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य

रामचरितमानस के संवाद तत्कालीन भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को भी अभिव्यक्त करते हैं। पिता-पुत्र संबंध, भाईचारा, दांपत्य निष्ठा, गुरु-शिष्य संबंध, राजा-प्रजा संबंध, मित्रता, सेवा और धर्म जैसे मूल्य संवादों में बार-बार दिखाई देते हैं।

राम के संवादों में कर्तव्य और मर्यादा, भरत के संवादों में त्याग, हनुमान के संवादों में सेवा, विभीषण के संवादों में नीति और सीता के संवादों में निष्ठा एवं दृढ़ता का मूल्य स्थापित होता है। इस प्रकार संवाद केवल साहित्यिक उपकरण नहीं बल्कि सांस्कृतिक मूल्य-प्रेषण का माध्यम भी हैं।

XVI. निष्कर्ष

रामचरितमानस के संवादों का अध्ययन यह प्रमाणित करता है कि तुलसीदास की चरित्र-चित्रण कला अत्यंत व्यापक, प्रभावशाली और बहुआयामी है। उन्होंने पात्रों को केवल कथानक की आवश्यकताओं के अनुसार प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि संवादों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व की आंतरिक परतों को उद्घाटित किया। राम के संवादों में मर्यादा और कर्तव्य, भरत में त्याग, लक्ष्मण में सेवा और वीरता, सीता में प्रेम और दृढ़ता, हनुमान में भक्ति और बुद्धि, दशरथ में वात्सल्य, कैकेयी में मनोवैज्ञानिक द्वंद्व, विभीषण में नीति और रावण में अहंकार का प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

तुलसीदास की विशेषता यह है कि उनके पात्र आदर्शवादी होते हुए भी पूर्णतः निर्जीव या एकांगी नहीं हैं। उनके भीतर मानवीय भावनाएँ, कमजोरियाँ, संघर्ष और निर्णय उपस्थित हैं। संवाद इन सभी तत्वों को जीवंत बनाते हैं। तुलसीदास ने पात्रानुकूल भाषा, भावानुकूल शैली, मनोवैज्ञानिक गहराई, नैतिक चेतना और लोकभाषा की सहजता के माध्यम से संवादों को चरित्र-निर्माण का प्रभावी साधन बनाया है।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो *रामचरितमानस* के पात्र एक-दूसरे के विरोध और सामंजस्य दोनों के माध्यम से विकसित होते हैं। राम और रावण धर्म तथा अहंकार के प्रतीक हैं; राम और भरत कर्तव्य और त्याग के; राम और लक्ष्मण संयम और भावात्मक तीव्रता के; जबकि रावण और विभीषण अहंकार और विवेक के प्रतीक बनकर सामने आते हैं। इस प्रकार तुलसीदास की संवाद-योजना चरित्रों के बीच वैचारिक और भावात्मक संबंधों को स्थापित करती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि *रामचरितमानस* के संवाद तुलसीदास की चरित्र-चित्रण कला की आधारभूत शक्ति हैं। इनके माध्यम से कवि ने भारतीय जीवन-मूल्यों, मानवीय मनोविज्ञान और आदर्श चरित्रों को ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति दी है जो आज भी पाठकों को प्रभावित करती है। तुलसीदास की संवाद-कला की स्थायी सफलता इसी में है कि उनके पात्र बोलते हुए केवल कथा नहीं कहते, बल्कि अपने व्यक्तित्व, विचार और युग की सांस्कृतिक चेतना को भी अभिव्यक्त करते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double- Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

संदर्भ

1. तुलसीदास। *रामचरितमानस*। गीता प्रेस।
2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद। *हिंदी साहित्य की भूमिका*। राजकमल प्रकाशन।
3. शुक्ल, रामचंद्र। *हिंदी साहित्य का इतिहास*। नागरी प्रचारिणी सभा।
4. वर्मा, रामकुमार। *हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास*। लोकभारती प्रकाशन।
5. नामवर सिंह। *इतिहास और आलोचना*। राजकमल प्रकाशन।
6. त्रिपाठी, राममूर्ति। *रामचरितमानस का साहित्यिक विवेचन*। साहित्य भवन।
7. मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद। *तुलसीदास*। साहित्य अकादेमी।
8. नगेन्द्र। *हिंदी साहित्य का इतिहास*। नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
9. शुक्ल, रामचंद्र। *गोस्वामी तुलसीदास*। नागरी प्रचारिणी सभा।
10. द्विवेदी, हजारी प्रसाद। *मध्यकालीन धर्म-साधना*। साहित्य भवन।